लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रम्

नाम्नां साश्ट सहस्रं च ब्रूहि गार्ग्य महामते
महा लक्श्म्या महा देव्या भुक्ति मुक्त्य् अर्थ सिद्धये १

गार्ग्य उवाच
सनत् कुमारम् आसीनं द्वादज़ादित्य सन्निभम्
अप्च्छन् योगिनो भक्त्या योगिनाम् अर्थ सिद्धये २

सर्व लौकिक कर्मभ्यो विमुक्तानां हिताय वै
भुक्ति मुक्ति प्रदं जप्यम् अनु ब्रूहि दयानिधे ३

सनत्कुमार भगवन् सर्वज्ज्ञो 'सि विज़ेशतः
आस्तिक्य सिद्धये न्नां क्शिप्र धर्मार्थ साधनम् ४

खिद्यन्ति मानवाः सर्वे धना भावेन केवलम्
सिद्ध्यन्ति धनिदो 'न्यस्य नैव धर्मार्थ कामनाह् ५

दारिद्र्य ध्वंसिनी नाम केन विद्या प्रकीर्तिता
केन वा ब्रह्म विद्यापि केन म्त्यु विनाज़िनी ६

सर्वासां सार भूतैका विद्यानां केन कीर्तिता

प्रत्यक्श सिद्धिदा ब्रह्मन् ताम् आचक्श्व दयानिधे ७

सनत्कुमार उवाच
साधु प्रुटं महा भागाह् सर्व लोक हितैशिणः
महताम् एश धर्मज़् च नान्येशाम् इति मे मतिः ८

ब्रह्म विश्णु महादेव महेन्द्रादि महात्मभिः
सम्प्रोक्तं कथयाम् यद्य लक्ष्मी नाम सहस्रकम् ९

यस्योच्चारण मात्रेण दारिद्र्यान् मुच्यते नरः
किं पुनस् तज् जपाज् जापी सर्वेश्टार्थान् अवाप्नुयात् १०

अथ सघ्कल्पः
अस्य ज़्री लक्ष्मी दिव्य सहस्र नाम स्तोत्र महामन्त्रस्य
आनन्द कर्दम चिक्ळीतेन्दिरा सुतादयो महात्मानो महर्शयः,
अनुश्टुप् चन्दः, विश्णुमाया ज़क्तिः, महा लक्ष्मीः परा देवता,
ज़्री महा लक्ष्मी प्रसाद द्वारा सर्वेश्टार्थ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः

अथ ध्यानम्
पद्मनाभ प्रियां देवीं पद्माक्शीं पद्मवासिनीम्
पद्मवक्त्रां पद्महस्तां वन्दे पद्माम् अहर् निज़म् १

पूर्णेन्दु वदनां दिव्य रत्ना भरण भूशिताम्
वरदा भय हस्ताढ्यां ध्यायेच् चन्द्र सहोदरीम् २

इच्चा रूपां भगवतः सच्चिदानन्द रूपिणीम्
सर्वज्ज्ञां सर्व जननीं विश्णु वक्शस् स्थला लयाम्
दयालुम् अनिज़ं ध्यायेत् सुख सिद्धि स्वरूपिणीम् ३

अथ लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्रम्
नित्यागतानन्त नित्या नन्दिनी जनरञ्जनी
नित्य प्रकाज़िनी चैव स्वप्रकाज़ स्वरूपिणी १

महा लक्ष्मीर् महा काली महा कन्या सरस्वती
भोग वैभव सन्धात्री भक्तानुग्रह कारिणी २

ईज़ावास्या महा माया महादेवी महेज़्वरी
हल्लेखा परमा ज़क्तिर् मात्का बीज रूपिणी ३

नित्यानन्दा नित्य बोधा नादिनी जन मोदिनी
सत्य प्रत्ययनी चैव स्वप्रकाज़ात्म रूपिणी ४

त्रिपुरा भैरवी विद्या हंसा वागीज़्वरी ज़िवा
वाग्देवी च महा रात्रिः काल रात्रिस् त्रिलोचना ५

भद्रकाली कराली च महाकाली तिलोत्तमा
काली कराल वक्त्रान्ता कामाक्शी कामदा ज़ुभा ६

चण्डिका चण्ड रुपेज़ा चामुण्डा चक्र धारिणी
त्रैलोक्य जयिनी देवी त्रैलोक्य विजयोत्तमा ७

सिद्ध लक्ष्मी: क्रिया लक्ष्मीर् मोक्श लक्ष्मी: प्रसादिनी
उमा भगवती दुर्गा चान्द्री दाक्शायणी ज़िवा ८

प्रत्यघ्गिरा धरावेला लोकमाता हरिप्रिया
पार्वती परमा देवी ब्रह्म विद्या प्रदायिनी ९

अरूपा बहु रूपा च विरूपा विज़्व रूपिणी
पञ्च भूतात्मिका वाणी पञ्च भूतात्मिका परा १०

काली–मा पञ्चिका वाग्मी हवि: प्रत्यधि देवता
देव माता सुरेज़ाना देव गर्भा 'म्बिका ध्ति: ११

सघ्ख्या जाति: क्रिया ज़क्ति: प्रक्तिर् मोहिनी मही
यज्ञ विद्या महा विद्या गुह्य विद्या विभावरी १२

ज्योतिश्मती महा माता सर्व मन्त्र फल प्रदा

दारिद्र्य ध्वंसिनी देवी हृदय ग्रन्थि भेदिनी १३

सहस्रादित्य सघ्काज़ा चन्द्रिका चन्द्र रूपिणी
गायत्री सोम सम्भूतिः सावित्री प्रणवात्मिका १४

ज़घ्करी वैश्णवी ब्राह्मी सर्व देव नमस्क्ता
सेव्य दुर्गा कुबेराक्शी कर वीर निवासिनी १५

जया च विजया चैव जयन्ती चापराजिता
कुब्जिका कालिका ज़ास्त्री वीणा पुस्तक धारिणी १६

सर्वज्ञ ज़क्तिः ज़्री ज़क्तिर् ब्रह्म विश्णु ज़िवात्मिका
इडा पिघ्गलिका मध्या म्णाली तन्तु रूपिणी १७

यज्ञेज़ानी प्रथा दीक्शा दक्शिणा सर्व मोहिनी
अश्टाघ्ग योगिनी देवी निर्बीज ध्यान गोचरा १८

सर्व तीर्थ स्थिता ज़ुद्धा सर्व पर्वत वासिनी
वेद ज़ास्त्र प्रभा देवी शड् अघ्गादि पद क्रम १९

ज़िवा धात्री ज़ुभानन्दा यज्ञ कर्म स्वरूपिणी
व्रतिनी मेनका देवी ब्रह्माणी ब्रह्मचारिणी २०

एकाक्शर परा तारा भव बन्ध विनाज़िनी
विज़्वम्भरा धराधारा निराधाराधिक स्वरा २१

राका कुहूर् अमावास्या पूर्णिमा 'नुमती द्युतिः
सिनीवाली ज़िवा वज़्या वैज़्वदेवी पिज़घ्गिला २२

पिप्पला च विज़ालाक्शी रक्शोघ्नी व्रिट कारिणी
दुश्ट विद्राविणी देवी सर्वोपद्रव नाज़िनी २३

ज़ारदा ज़र सन्धाना सर्व ज़स्त्र स्वरूपिणी
युद्ध मध्य स्थिता देवी सर्व भूत प्रभञ्जनी २४

अयुद्धा युद्ध रूपा च ज़ान्ता ज़ान्ति स्वरूपिणी
गघ्गा सरस्वती वेणी यमुना नर्मदापगा २५

समुद्र वसना वासा ब्रह्माण्ड ज़्रोणि मेखला
पञ्च वक्त्रा दज़ भुजा ज़ुद्ध स्फटिक सन्निभा २६

रक्ता क्शणा सिता पीता सर्व वर्णा निरीज़्वरी
कालिका चक्रिका देवी सत्या तु बटुका स्थिता २७

तरुणी वारुणी नारी ज्येश्ठा देवी सुरेज़्वरी
विज़्वम्भरा धरा कर्त्री गलार्गल विभञ्जनी २८

सन्ध्या रात्रिर् दिवा ज्योत्स्ना कला काश्ठा निमेशिका
उर्वी कात्यायनी ज़ुभ्रा संसारार्णव तारिणी २९

कपिला कीलिका ’ज़ोका मल्लिका नवमल्लिका
देविका नन्दिका ज़ान्ता भञ्जिका भय भञ्जिका ३०

कौज़िकी वैदिकी देवी सौरी रूपाधिकातिभा
दिग् वस्त्रा नव वस्त्रा च कन्यका कमलोद्भवा ३१

ज़्री: सौम्य लक्शणातीतदुर्गा सूत्र प्रबोधिका
ज़्रद्धा मेधा क्ति: प्रज्झा धारणा कान्तिर् एव च ३२

ज़्रुति: स्म्तिर् ध्तिर् धन्या भूतिर् इश्टिर् मनीशिणी
विरक्तिर् व्यापिनी माया सर्व माया प्रभञ्जनी ३३

महेन्द्री मन्त्रिणी सिंही चेन्द्र जाल स्वरूपिणी
अवस्था त्रय निर्मुक्ता गुण त्रय विवर्जिता ३४

ईशण त्रय निर्मुक्ता सर्व रोग विवर्जिता
योगि ध्यानान्त गम्या च योग ध्यान परायणा ३५

त्रयी ज़िखा विज़ेशज्झा वेदान्त ज्झान रूपिणी

भारती कमला भाशा पद्मा पद्मवती क्ति: ३६

गौतमी गोमती गौरी ईज़ाना हंस वाहनी
नारायणी प्रभा धारा जाह्नवी ज़घ्करात्मजा ३७

चित्र घण्टा सुनन्दा ज़्रीर् मानवी मनु सम्भवा
स्तम्भिनी क्शोमिणी मारी भ्रामिणी ज़न्तु मारिणी ३८

मोहिनी द्वेश्टिणी विरा अघोरा रुद्र रुपिणी
रुद्रैकादज़िनी पुण्या कल्याणी लाभ कारिणी ३९

देव दुर्गा महा दूता स्वप्न दुर्गा अश्टभैरवी
सूर्य चन्द्राग्नि रूपा च ग्रह नक्शत्र रूपिणी ४०

बिन्दु नाद कला तीता बिन्दु नाद कलात्मिका
दज़ वायु जया कारा कला शोडज़ संयुता ४१

काज़्यपी कमला देवी नाद चक्र निवासिनी
म्डा धारा स्थिरा गुह्या देविका चक्र रूपिणी ४२

अविद्या ज़ार्वरी भुङ्ज्जा जम्भासुर निबर्हिणी
ज़्री काया ज़्री कला ज़ुभ्रा कर्म निर्मूल कारिणी ४३

आदि लक्ष्मीर् गुणा धारा पञ्च ब्रह्मात्मिका परा
ऋतिर् ब्रह्म मुखा वासा सर्व सम्पत्ति रूपिणी ४४

म्त सञ्जीवनी मैत्री कामिनी काम वर्जिता
निर्वाण मार्गदा देवी हंसिनी काज़िका क्शमा ४५

सपर्या गुणिनी भिन्ना निर्गुणा खण्डिता ज़ुभा
स्वामिनी वेदिनी ज़क्या ज़ाम्बरी चक्र धारिणी ४६

दण्डिनी मुण्डिनी व्याघ्री ज़िखिनी सोम संहतिः
चिन्तामणिज़् चिदानन्दा पञ्च बाणाग्र बोधिनी ४७

बाण ज़्रेणिः सहस्राक्शी सहस्र भुज पादुका
सन्ध्यावलिस् त्रिसन्ध्याख्या ब्रह्माण्ड मणि भूशणा ४८

वासवी दारुणी सेना कुलिका मन्त्र रञ्जनी
जित प्राण स्वरूपा च कान्ता काम्य वर प्रदा ४९

मन्त्र ब्राह्मण विद्यार्थी नाद रूपा हविश्मती
आथर्वनिः ऋतिः ज़ून्या कल्पना वर्जिता सती ५०

सत्ता जातिः प्रमा 'मेया प्रमितिः प्राणदा गतिः
अवर्णा पञ्च वर्णा च सर्वदा भुवनेज़्वरी ५१

त्रैलोक्य मोहिनी विद्या सर्व भर्त्री क्शराक्शरा
हिरण्य वर्णा हरिणी सर्वोपद्रव नाज़िनी ५२

कैवल्य पदवी रेखा सूर्य मण्डल संस्थिता
सोम मण्डल मध्य स्था वह्नि मण्डल संस्थिता ५३

वायु मण्डल मध्य स्था व्योम मण्डल संस्थिता
चक्रिका चक्र मध्य स्था चक्र मार्ग प्रवर्तिनी ५४

कोकिला कुल चक्रेज़ा पक्शातिः पघ्क्ति पावनी
सर्व सिद्धान्त मार्ग स्था शड् वर्णा वर वर्जिता ५५

ज़र रुद्र हरा हन्त्री सर्व संहार कारिणी
पुरुशा पौरुशी तुश्टिः सर्व तन्त्र प्रसूतिका ५६

अर्ध नारीज़्वरी देवी सर्व विद्या प्रदायिनी
भार्गवी भूजुशी विद्या सर्वोपनिशदा स्थिता ५७

व्योम केज़ाखिल प्राणा पञ्च कोज़ विलक्शणा
पञ्च कोज़ात्मिका प्रत्यक् पञ्च ब्रह्मात्मिका ज़िवा ५८

जगज् जरा जनित्री च पञ्च कर्म प्रसूतिका

वाग् देव्या भरणा कारा सर्व काम्य स्थिता स्थिति ५९

अश्टा दश चतुः शश्टि पीठिका विद्यया युता
कालिका कर्शण श्यामा यक्शिणी किन्नरेश्वरी ६०

केतकी मल्लिका ’शोका वाराही धरणी ध्रुवा
नारसिंही महोग्रास्या भक्तानाम् आर्ति नाशिनी ६१

अन्तर्वला स्थिरा लक्ष्मीर् जरा मरण नाशिनी
श्री रञ्जिता महाकाया सोम सूर्याग्नि लोचना ६२

अदितिर् देवमाता च अश्ट पुत्रा अश्ट योगिनी
अश्ट प्रक्तिर् अश्टाश्ट विभ्राजद् विक्ता क्तिः ६३

दुर्भिक्श ध्वंसिनी देवी सीता सत्या च रुक्मिणी
ख्यातिजा भार्गवी देवी देव योनिस् तपस्विनी ६४

शाकम्भरी महाशोणा गरुडोपरि संस्थिता
सिंहगा व्याघ्रगा देवी वायुगा च महाद्रिगा ६५

अकारा दिक्श कारान्ता सर्व विद्याधि देवता
मन्त्र व्याख्यान निपुणा ज्योतिः शास्त्रैक लोचना ६६

इडा पिङ्गलिका मध्या सुशुम्ना ग्रन्थि भेदिनी
काल चक्रा ज़्रयोपेता काल चक्र स्वरूपिणी ६७

वैज़ारदी मति ज़्रेश्ठा वरिश्ठा सर्व दीपिका
वैनायकी वरारोहा ज़्रोणि वेला बहिर्वलि: ६८

जम्मिनी ज्म्भिणी जम्भ कारिणी गण कारिका
ज़रणी चक्रिकानन्ता सर्व व्याधि चिकित्सकी ६९

देवकी देव संकाज़ा वारिधि: करुणा करा
ज़र्वरी सर्व सम्पन्ना सर्व पाप प्रभञ्जनी ७०

एक मात्रा द्वि मात्रा च त्रि मात्रा च तथा 'परा
अर्ध मात्रा परा सूक्श्मा सूक्श्मार्थार्थ परा 'परा ७१

एकवीरा विज़ेशाख्या शश्ठी देवी मनस्विनी
नैश्कर्म्या निश्कला लोका ज्ञान कर्माधिका गुणा ७२

सबन्ध्वानन्द सन्दोहा व्योमा कारा 'निरूपिता
गद्य पद्यात्मिका वाणी सर्वा लघ्कार संयुता ७३

साधु बन्ध पद न्यासा सर्वौको घटिकावलि:
शट् कर्मा कर्कज़ा कारा सर्व कर्म विवर्जिता ७४

आदित्य वर्णा चापर्णा कामिनी वर रूपिणी
ब्रह्माणी ब्रह्म सन्ताना वेद वागीज़्वरी ज़िवा ७५

पुराण न्याय मीमांसा धर्म ज़ास्त्रागम ज़्रुता
सद्यो वेदवती सर्वा हंसी विद्याधि देवता ७६

विज़्वेज़्वरी जगद्धात्री विज़्व निर्माण कारिणी
वैदिकी वेद रूपा च कालिका काल रूपिणी ७७

नारायणी महादेवी सर्व तत्त्व प्रवर्तिनी
हिरण्य वर्ण रूपा च हिरण्य पद सम्भवा ७८

कैवल्य पदवी पुण्या कैवल्य ज्झान लक्शिता
ब्रह्म सम्पत्ति रूपा च ब्रह्म सम्पत्ति कारिणी ७९

वारूणी वारुणा राध्या सर्व कर्म प्रवर्तिनी
एकाक्शर परा 'युक्ता सर्व दारिद्र्य भङ्जिनी ८०

पाज़ा अघ्कुज़ान्विता दिव्या वीणा व्याख्याक्श सूत्र भ्त्
एक मूर्तिस् त्रयी मूर्तिर् मधु कैटभ भङ्जनी ८१

साघ्ख्या साघ्ख्यवती ज्वाला ज्वलन्ती काम रूपिणी

जाग्रन्ती सर्व सम्पत्तिः सुशुप्तान्वेश्ट दायिनी ८२

कपालिनी महा दंस्ट्रा भ्रुकुटी कुटिलानना
सर्वा वासा सुवासा च ब्हत्य् अश्टिज़् च ज़क्करी ८३

चन्दो गण प्रतिश्ठा च कल्माशी करुणात्मिका
चक्शुश्मती महाघोशा खड्ग चर्म धराज़निः ८४

ज़िल्प वैचित्र्य विद्योता सर्वतोभद्र वासिनी
अचिन्त्य लक्शणा कारा सूत्र भाश्य निबन्धना ८५

सर्व वेदार्थ सम्पत्तिः सर्व ज़ास्त्रार्थ मात्का
अकारा दिक्श कारान्त सर्व वर्ण क्त स्थला ८६

सर्व लक्ष्मीः सदानन्दा सारविद्या सदाज़िवा
सर्वज्झा सर्व ज़क्तिज़् च खेचरी रूप गोच्चिता ८७

अणिमादि गुणोपेता परा काश्ठा परा गतिः
हंस युक्त विमान स्था हंसारूडा ज़ज़िप्रभा ८८

भवानी वासना ज़क्तिर् आक्तिस्था 'खिलाखिला
तन्त्र हेतुर् विचित्राघ्गी व्योम गघ्गा विनोदिनी ८९

वर्शा च वार्शिका चैव ग् यजुस् साम रूपिणी
महा नदी नदी पुण्या 'गण्या पुण्य गुणक्रिया ९०

समाधि गत लभ्यार्था ज़्नोतव्या स्वप्रिया घ्णा
नामाक्शर परा देवी उपसर्ग नखाञ्चिता ९१

निपातोर् उद्वयी जघ्घा मात्का मन्त्र रूपिणी
आज़ीना च ज़याना च तिश्ठन्ती धावनाधिका ९२

लक्श्य लक्शण योगाढ्या ताद् रूप्य गणन आक्तिः
सैक रूपा नैक रूपा सेन्दु रूपा तद् आक्तिः ९३

समासतद् धिता कारा विभक्ति वचनात्मिका
स्वाहा कारा स्वधा कारा ज़्री पत्य् अर्धाघ्ग नन्दिनी ९४

गम्भीरा गहना गुह्या योनि लिघ्गार्ध धारिणी
ज़ेश वासुकि संसेव्या चशाला वर वर्णिनी ९५

कारुण्या कार सम्पत्तिः कील क्र् मन्त्र कीलिका
ज़क्ति बीजात्मिका सर्व मन्त्रेश्टा क्शय कामना ९६

आग्नेयी पार्थिवा आप्या वायव्या व्योम केतना
सत्य ज्ज्ञानात्मिका 'नन्दा ब्राह्मी ब्रह्म सनातनी ९७

अविद्या वासना माया प्रक्तिः सर्व मोहिनी
ज़क्तिर् धारण ज़क्तिज़् च चिद् अचिच् चक्ति योगिनी ९८

वक्त्रारुणा महा माया मरीचिर् मद मर्दिनी
विराट् स्वाहा स्वधा ज़ुद्धा नीरूपास्तिः सुभक्तिगा ९९

निरूपित द्वयी विद्या नित्यानित्य स्वरूपिणी
वैराज मार्ग सञ्चारा सर्व सत्पथ दर्ज़िनी १००

जालन्धरी म्डानी च भवानी भव भञ्जनी
त्रै कालिक ज्ञान तन्तुस् त्रि काल ज्ञान दायिनी १०१

नादातीता स्मितः प्रज्ञा धात्री रूपा त्रिपुश्करा
पराजिता विधानज्ञा विज़िशित गुणात्मिका १०२

हिरण्य केज़िनी हेम ब्रह्म सूत्र विचक्शणा
असघ्ख्येय परार्धान्त स्वर व्यञ्जन वैखरी १०३

मधुजिह्वा मधुमती मधु मासो दया मधुः
माधवी च महाभागा मेघ गम्भीर निस्वना १०४

ब्रह्म विश्णु महेज़ादि ज्ञात व्यार्थ विज़ेशगा

नाभौ वह्नि ज़िखा कारा ललाटे चन्द्र ज़न्निभा १०५

भ्रू मध्ये भास्करा कारा सर्व तारा क्तिर् हृद
क्तिकादि भरण्य् अन्त नक्शत्रेश्ट्य् आर्चितो दया १०६

ग्रह विद्यात्मिका ज्योतिर् ज्योतिर् विन्मति जीविका
ब्रह्माण्ड गर्भिणी बाला सप्ता वरण देवता १०७

वैराजोत्तम साम्राज्या कुमार कुज़लो दया
बगला भ्रम रांबा च ज़िवदूती ज़िवात्मिका १०८

मेरु विन्ध्याति संस्थाना काज़्मीर पुर वासिनी
योगनिद्रा महानिद्रा विनिद्रा राक्शस आज़्रिता १०९

सुवर्णदा महा गघ्गा पञ्चाख्या पञ्च संहतिः
सुप्रजाता सुवीरा च सुपोशा सुपतिः ज़िवा ११०

सुग्हा रक्त बीजान्ता हत कन्दर्प जीविका
समुद्र व्योम मध्यस्था सम बिन्दु समाज़्रया १११

सौभाग्य रस जीवातुः सारा सार विवेक द्क्
त्रिवल्यादि सुपुश्टाघ्गा भारती भरताज़्रिता ११२

नाद ब्रह्म मयी विद्या ज्ञान ब्रह्ममयी परा
ब्रह्म नाडी निरुक्तिज़् च ब्रह्म कैवल्य साधनम् ११३

कालिकेय महोदार वीर्य विक्रम रूपिणी
वडवाग्नि ज़िखा वक्त्रा महा कवल तर्पणा ११४

महाभूता महादर्पा महासारा महाक्रतुः
पञ्च भूत महाग्रासा पञ्च भूतादि देवता ११५

सर्व प्रमाणा सम्पत्तिः सर्व रोग प्रतिक्रिया
ब्रह्माण्डान्तर् बहिर् व्याप्ता विश्णु वक्शो विभूशिणी ११६

ज़ाघ्करी विधि वक्त्र स्था प्रवरा वर हेतुकी
हेम माला ज़िखा माला त्रिज़िखा पञ्च मोचना ११७

सर्वागम सदाचारा मर्यादा यातु भञ्जनी
पुण्य ज़्लोक प्रबन्धाढ्या सर्वान्तर्यामि रूपिणी ११८

साम गान समाराध्या ज़्रोत्र कर्ण रसायनम्
जीव लोकैक जीवातुर् भद्रो दार विलोकना ११९

तडित् कोटि लसत् कान्तिः तरुणी हरि सुन्दरी
मीन नेत्रा च सेन्द्राक्शी विज़ालाक्शी सुमघ्गला १२०

सर्व मघ्गल संपन्ना साक्शान् मघ्गल देवता
देह हृद् दीपिका दीप्तिर् जिह्म पाप प्रणाज़िनी १२१

अर्ध चन्द्रोल्लसद् दंस्ट्रा यज्झ वाटी विलासिनी
महादुर्गा महोत्साहा महादेव बलोदया १२२

डाकिनीड्या ज़ाकिनीड्या साकिनीड्या समस्तजुट्
निरघ्कुज़ा नाकिवन्द्या शडा धाराधि देवता १२३

भुवन ज्झानिनिः ज़्रेणी भुवनाकार वल्लरी
ज़ाज़्वती ज़ाज़्वता कारा लोकानुग्रह कारिणी १२४

सारसी मानसी हंसी हंस लोक प्रदायिनी
चिन् मुद्रा अलघ्क्त करा कोटि सूर्य सम प्रभा १२५

सुख प्राणिः ज़िरो रेखा नद द्रुट प्रदायिनी
सर्व साघ्कर्य दोशघ्नी ग्रहोपद्रव नाज़िनी १२६

क्शुद्र जन्तु भय घ्नी च विश रोगादि भञ्जनी
सदा ज़ान्ता सदा ज़ुद्धा ग्हच् चिद्र निवारिणी १२७

कलि दोश प्रज़मनी कोलाहल पुर स्थिता

गौरी काक्शणिकी मुख्या जघन्याक्ति वर्जिता १२८

मायाविद्या मूल भूता वासवी विश्णु चेतना
वादिनी वसु रूपा च वसु रत्न परिच्चदा १२९

चांदसी चन्द्र हदया मन्त्र स्वच्चन्द भैरवी
वनमाला वैजयन्ती पञ्च दिव्या युधात्मिका १३०

पीताम्बर मयी चञ्चत् कौस्तुभा हरि कामिनी
नित्या तथ्या रमा रामा रमणी म्त्यु भञ्जनी १३१

ज्येश्ठा काश्ठा धनिश्ठान्ता ज़राघ्गी निर्गुण प्रिया
मैत्रेया मित्रविन्दा च ज़ेश्य ज़ेश कला ज़या १३२

वाराणसी वासरताच् आर्यावर्त जन स्तुता
जगद् उत्पत्ति संस्थान संहार त्रय कारणम् १३३

त्वम् अम्ब विश्णु सर्वस्वं नमस्ते 'स्तु महेज़्वरि
नमस्ते सर्व लोकानां जनन्यै पुण्य मूर्तये १३४

सिद्ध लक्ष्मीर् महाकालि महालक्ष्मी नमो 'स्तु ते
सद्योजातादि पञ्चाग्निः रुपा पञ्चक पञ्चकम् १३५

यन्त्र लक्ष्मीर् भवत्य् आदिर् आद्य् आद्ये ते नमो नमः
स्रष्ट्यादि कारणा कार वितते दोश वर्जिते १३६

जगल् लक्ष्मीर् जगन् मातर् विश्णु पत्नि नमो 'स्तु ते
नव कोटि महाशक्ति समुपास्य पदाम्बुजे १३७

कनत् सौवर्ण रत्नाढ्ये सर्वा भरण भूशिते
अनन्ता नित्य महिशि प्रपञ्चेश्वर नायकि १३८

अत्य् उच्चित्र पदान्तस् स्थे परम व्योम नायकि
नाक प्रुठ गताराध्ये विश्णु लोक विलासिनि १३९

वैकुण्ठ राज महिशि श्री रघ्ग नगराज्ञिते
रघ्ग नायकि भू पुत्रि कश्णे वरद वल्लभे १४०

कोटि ब्रह्मादि संसेव्ये कोटि रुद्रादि कीर्तिते
मातुलघ्ग मयं खेटं सौवर्ण चशकं तथा १४१

पद्म द्वयं पूर्ण कुंभं कीरं च वरदाभये
पाशम् अघ्कुशकं शघ्खं चक्रं शूलं क्पाणिकाम् १४२

धनुर् बाणौ चाक्श मालां चिन्मुद्राम् अपि बिभ्रती
अश्टादश भुजे लक्ष्मी महाश्टादश पीठगे १४३

भूमि नीलादि संसेव्ये स्वामि चित्तानुवर्तिनि
पद्मे पद्मालये पद्मि पूर्ण कुम्भा अभिशेचिते १४४

इन्दिरेन्दिरा अभाक्शि क्शीर सागर कन्यके
भार्गवि त्वं स्व तन्त्रेद्या वज़ी क्त जगत् पतिः १४५

मघ्गलं मघ्गलानां त्वं देवतानां च देवता
त्वम् उत्तमोत्तमानां च त्वं ज़्रेयः परमाम्तम् १४६

धन धान्या भिव्द्धिज़् च सार्वभौम सुखोच्च्रया
आन्दोलिकादि सौभाग्यं मत्तेभादि महोदयः १४७

पुत्र पौत्राभि व्द्धिज़् च विद्या भोग बलादिकम्
आयुर् आरोग्य सम्पत्तिर् अश्टैज़्वर्यं त्वम् एव हि १४८

पदम् एव विभूतिज़् च सूक्श्मात् सूक्श्मतरा गतिः
सदया आपाघ्ग सन्दत्त ब्रह्मेन्द्रादि पद स्थितिः १४९

अव्याहत महाभाग्यं त्वम् एवाक्शोभ्य विक्रमः
समन्वयज़् च वेदानाम् अविरोधस् त्वम् एव हि १५०

निःज़्रेयस पद प्राप्ति साधनं फलम् एव च

ज़्री मन्त्र राज राज्ञी च ज़्रीविद्या क्शेम कारिणी १५१

ज़्रीं बीज जप सन्तुश्टा ऐं–ह्रीम्–ज़्रीम्–बीज पालिका
प्रपत्ति मार्ग सुलभा विश्णु प्रथम किघ्करी १५२

क्लीं कारार्थ सावित्री च सौमघ्गल्या अधिदेवता
ज़्री शोडज़ाक्शरी विद्या ज़्री यन्त्र पुर वासिनी १५३

सर्व मघ्गल माघ्गल्ये ज़िवे सर्वार्थ साधिके
ज़रण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमो 'स्तु ते
पुनः पुनर् नमस्ते 'स्तु साश्टाघ्गम युतं पुनः १५४

सनत्कुमार उवाच
एवं स्तुता महालक्ष्मीर् ब्रह्म रुद्रादिभिः सुरैः
नमद्भिर् आर्तैर् दीनैज़् च निस्स्वत्वैर् भोग वर्जितैः १५५

ज्येश्ठा जुश्टैज़् च निःज़्रीकैः संसारा स्व परायणैः
विश्णुपत्नी ददौ तेशां दर्ज़नं दि्श्ट तर्पणम् १५६

ज़रत् पुर्णेन्दु कोट्याभ धवलापाघ्ग वीक्शणैः
सर्वान् सत्त्व समाविश्टान् चक्रे हश्टा वरं ददौ १५७

महालक्ष्मीर् उवाच

नाम्नां साश्ट सहस्रं मे प्रमादाद्वापि यः सक्त्
कीर्तयेत् तत् कुले सत्यं वसाम्या चन्द्र तारकम् १५८

किं पुनर् नियमाज् जप्तुर् मद् एक ज़रणस्य च
मात् वत्सानुकम्पाहं पोशकी स्याम् अहर् निज़म् १५९

मन् नाम स्तवतां लोके दुर्लभं नास्ति चिन्तितम्
मत् प्रसादेन सर्वे 'पि स्वस्वेश्टार्थम् अवाप्स्यथ १६०

लुप्त वैश्णव धर्मस्य मद् व्रतेश्व् अवकीर्णिनः
भक्ति प्रपत्ति हीनस्य वन्द्यो नाम्नां स्तवो 'पि मे १६१

तस्माद् अवज़्यं तैर् दोशैर् विहीनः पाप वर्जितः
जपेत् साश्ट सहस्रं मे नाम्नां प्रत्यहम् आदरात् १६२

साक्शाद् अलक्ष्मी पुत्रो 'पि दुर्भाग्यो 'प्य् अलसो 'पि वा
अप्रयत्नो 'पि मूढो 'पि विकलः पतितो 'पि च १६३

अवज़्यं प्राप्नुयाद् भाग्यं मत्प्रसादेन केवलम्
स्प्हेयम् अचिराद् देवा वरदानाय जापिनः
ददामि सर्वम् इश्टार्थं लक्ष्मीति स्मरतां ध्रुवम् १६४

सनत्कुमार उवाच

इत्य् उक्त्वा अन्तर्दधे लक्ष्मीर् वैश्णवी भगवत् कला
इश्टा पूर्तं च सुक्तं भाग धेयं च चिन्तितम् १६५

स्वं स्वं स्थानं च भोगं च विजयं लेभिरे सुराः
तद् एतत् प्रवदाम्य् अद्य लक्ष्मी नाम सहस्रकम्
योगिनः पठत क्शिप्रं चिन्तितार्थान् अवाप्स्यथ १६६

गार्ग्य उवाच
सनत् कुमारो योगीन्द्र इत्य् उक्त्वा स दयानिधिः
अनुग्ह्य ययौ क्शिप्रं तांज़् च द्वादज़ योगिनः १६७

तस्माद् एतद् रहस्यं च गोप्यं जप्यं प्रयत्नतः
अश्टम्यां च चतुर्दज़्यां नवाभ्यां भ्गु वासरे १६८

पौर्णमास्याम् अमायां च पर्व काले विज़ेशतः
जपेद् वा नित्य कार्येशु सर्वान् कामान् अवाप्नुयात् १६९

इति स्कन्द पुराणे सनत्कुमार सम्हितायाम्
ज़्री लक्ष्मी सहस्र नाम स्तोत्रं संपूर्णम्